

पद चालीस का गुप्त इतिहास — संख्या पच्चीस

यहेजकेल संख्या छह

Jeff Pippenger

2026-08-11

मैं Testimonies के एक ऐसे अंश से लेता रहा हूँ जो पवित्रस्थान के भीतर यहेजकेल, यशायाह और यूहन्ना के अनुभव के संबंध में सत्य की विविध धाराएँ प्रस्तुत करता है। प्रकाशितवाक्य अध्याय एक में यूहन्ना अपने पीछे की वाणी को देखने के लिए मुड़ा।

मैं प्रभु के दिन आत्मा में था, और अपने पीछे नरसिंगे के समान एक बड़ा शब्द सुना, जो कह रहा था, मैं अल्फा और ओमेगा हूँ, प्रथम और अन्तिम; और, जो कुछ तू देखता है, उसे एक पुस्तक में लिख, और उसे एशिया की उन सात कलीसियाओं के पास भेज दे; अर्थात् इफिसुस, और स्मूर्ना, और पिरगमुन, और थुआतीरा, और सार्दिस, और फिलादेल्फिया, और लौदीकिया के पास। और जो शब्द मुझ से बोल रहा था, उसे देखने के लिए मैं फिरा। और फिरकर मैंने सोने की सात दीवटें देखीं। प्रकाशितवाक्य 1:10-12.

पटमोस द्वीप से, और फिर स्वर्गीय पवित्रस्थान में, जहाँ यूहन्ना मसीह का वह दर्शन देखता है जिसके विषय में सिस्टर व्हाइट हमें बताती हैं, वही दर्शन है जिसे दानिय्येल ने अपनी पुस्तक के दसवें अध्याय में देखा था।

“उन दिनों मैं दानिय्येल पूरे तीन सप्ताह तक शोक करता रहा। मैंने कोई रुचिकर भोजन न खाया, न मांस और न दाखमधु मेरे मुँह में गया, और न ही मैंने अपने ऊपर कुछ अभिषेक किया।... तब मैंने अपनी आंखें उठाकर देखा, और देखो, एक पुरुष सन के वस्त्र पहिने हुए था, जिसकी कमर ऊफाज़ के कुन्दन सोने से कसी हुई थी। उसका शरीर भी पुखराज के समान था, उसका मुख बिजली के सदृश, उसकी आंखें अग्नि के दीपकों के समान, उसकी भुजाएँ और उसके पाँव चमकाए हुए पीतल के रंग के समान थे, और उसकी वाणी का शब्द भीड़ के शब्द के समान था’ (दानिय्येल 10:2-6)।”

“यह वर्णन उस वर्णन के समान है जो यूहन्ना को तब दिया गया था जब मसीह पटमोस द्वीप पर उसके सम्मुख प्रकट हुए थे। परमेश्वर के पुत्र से कम कोई व्यक्तित्व दानिय्येल के सम्मुख प्रकट नहीं हुआ। हमारा प्रभु एक अन्य स्वर्गीय दूत के साथ दानिय्येल को यह सिखाने के लिए आता है कि उत्तरकाल में क्या घटित होगा।”

Sanctified Life, 49.

पहली नौ आयतें यह पहचान कराती हैं कि यीशु मसीह का प्रकाशितवाक्य मानवीय अनुग्रह-अवधि के समापन से ठीक पहले किस प्रकार अनसील किया जाता है। यह प्रकाशितवाक्य परमेश्वर ने यीशु को दिया, जिसने उसे जिब्राएल को दिया, जिसने उसे यूहन्ना को इस आज्ञा के साथ दिया कि यूहन्ना उस सन्देश को सातों कलीसियाओं के पास भेजे। यशायाह ने भी यही करने का अपना आयोग छठे अध्याय में प्राप्त किया, और यहेजकेल ने भी दूसरा और तीसरा अध्याय में वही आदेश प्राप्त किया। जब यूहन्ना अपना आयोग प्राप्त करता है, तब वह एक बंदी है; यहेजकेल और दानिय्येल बाबुल में बन्दी हैं, और यशायाह यहूदा के दुष्ट राजा आहाज़ के इतिहास के समय में जीवन व्यतीत कर रहा है।

“पहियों के भीतर पहिए थे, ऐसी जटिल व्यवस्था में कि प्रथम दृष्टि में वे यहेजकेल को मानो पूर्णतः अव्यवस्थित प्रतीत हुए। परन्तु जब वे चले, तो अत्यन्त सुन्दर यथार्थता और पूर्ण सामंजस्य के साथ चले। स्वर्गीय प्राणी इन पहियों को संचालित कर रहे थे, और उन सब के ऊपर, महिमामय नीलम-सिंहासन पर, अनन्तकालीन परमेश्वर विराजमान था; और सिंहासन के चारों ओर घेरने वाला इन्द्रधनुष था, जो अनुग्रह और प्रेम का प्रतीक था। उस दृश्य की भयानक महिमा से अभिभूत होकर, यहेजकेल मुँह के बल गिर पड़ा, तभी एक वाणी ने उसे उठ खड़ा होने और यहोवा का वचन सुनने की आज्ञा दी। तब उसे इस्राएल के लिए चेतावनी का एक सन्देश दिया गया।”

तब मैं ने प्रभु का यह शब्द सुना, “मैं किसे भेजूँ, और हमारी ओर से कौन जाएगा?” तब मैं ने कहा, “मैं यहाँ हूँ; मुझे भेज।” यशायाह 6:8।

“यह दर्शन यहजेकेल को उस समय दिया गया था जब उसका मन उदास पूर्वाशंकाओं से भरा हुआ था। उसने अपने पितरों की भूमि को उजड़ी हुई अवस्था में पड़ा देखा...”

“इसी प्रकार, जब परमेश्वर प्रिय यूहन्ना पर भविष्य के युगों के लिए कलीसिया के इतिहास को प्रकट करने ही वाला था, तब उसने उसे उद्धारकर्ता की अपने लोगों के प्रति रुचि और देखभाल का यह आश्वासन दिया कि उसने उसे ‘मनुष्य के पुत्र के समान एक’ को दीवटों के बीच चलते हुए दिखाया, जो सात कलीसियाओं का प्रतीक थीं। ...”

“ये शिक्षाएँ हमारे हित के लिए हैं। हमें अपनी आस्था को परमेश्वर पर स्थिर रखना चाहिए, क्योंकि हमारे ठीक सामने ऐसा समय है जो मनुष्यों की आत्माओं की परीक्षा लेगा। ...”

“हम महान और गंभीर घटनाओं की दहलीज़ पर खड़े हैं। भविष्यवाणी तीव्र गति से पूरी हो रही है। प्रभु द्वार पर है। शीघ्र ही हमारे सामने ऐसा काल खुलने वाला है जो सभी जीवित लोगों के लिए अत्यन्त गहन महत्व का होगा। अतीत के विवाद पुनर्जीवित किए जाएँगे; नए विवाद उत्पन्न होंगे। जो दृश्य हमारे संसार में घटित होने वाले हैं, उनका अभी तक स्वप्न में भी आभास नहीं हुआ है। शैतान मानवीय माध्यमों के द्वारा कार्य कर रहा है। जो लोग संविधान को परिवर्तित करने और रविवार के पालन को लागू करने वाली व्यवस्था सुरक्षित करने का प्रयास कर रहे हैं, वे तनिक भी नहीं समझते कि इसका परिणाम क्या होगा। एक संकट ठीक हमारे ऊपर आ पहुँचा है।”

“परन्तु इस महान संकट में परमेश्वर के सेवकों को अपने ही ऊपर भरोसा नहीं करना है। यशायाह, यहजेकेल और यूहन्ना को दी गई दर्शनों में हम देखते हैं कि स्वर्ग पृथ्वी पर घटित होने वाली घटनाओं से कितनी निकटता से जुड़ा हुआ है, और जो उसके प्रति निष्ठावान हैं उनके लिए परमेश्वर की चिन्ता कितनी महान है। संसार बिना किसी शासक के नहीं है। आने वाली घटनाओं की रूपरेखा प्रभु के हाथों में है। स्वर्ग की महिमा अपनी कलीसिया के हितों के साथ-साथ जातियों के भाग्य को भी अपने ही अधिकार में रखती है। ...”

“यहजेकेल के दर्शन में परमेश्वर का हाथ करूबों के पंखों के नीचे था। यह उसके सेवकों को यह सिखाने के लिए है कि वही दैवी सामर्थ्य है जो उन्हें सफलता प्रदान करती है। यदि वे अधर्म को दूर कर दें और हृदय तथा जीवन में शुद्ध हो जाएँ, तो वह उनके साथ कार्य करेगा।

“जीवित प्राणियों के बीच बिजली की-सी तीव्रता के साथ चलता हुआ उज्ज्वल प्रकाश उस वेग का प्रतिनिधित्व करता है, जिसके साथ यह कार्य अंततः आगे बढ़कर पूर्णता को पहुँचेगा। ...”

“हे भाइयो, अब शोक और निराशा का समय नहीं है, न ही संदेह और अविश्वास के अधीन हो जाने का समय है। मसीह अब यूसुफ की नई कब्र में, बड़े पत्थर से बंद और रोमी मुहर से मुहरबंद, पड़े हुए उद्धारकर्ता नहीं हैं; हमारे पास एक जी उठे हुए उद्धारकर्ता हैं। वही राजा हैं, सेनाओं के यही वा; वह करूबों के बीच विराजमान हैं; और राष्ट्रों के संघर्ष और कोलाहल के बीच भी वह अब तक अपनी प्रजा की रक्षा करते हैं। जो स्वर्गों में राज्य करता है, वही हमारा उद्धारकर्ता है। वह प्रत्येक परीक्षा को नापता है। वह भट्टी की उस आग पर दृष्टि रखता है जो प्रत्येक प्राणी की परीक्षा अवश्य करेगी। जब राजाओं के गढ़ ढा दिए जाएँगे, जब परमेश्वर के क्रोध के बाण उसके शत्रुओं के हृदयों को बेध डालेंगे, तब उसकी प्रजा उसके हाथों में सुरक्षित रहेगी।” टेस्टिमनीज़, खंड 5, 752-754.

चार बाइबिलीय साक्षी इस तथ्य की पुष्टि करते हैं कि यीशु मसीह के प्रकाशन का संदेश उन व्यक्तियों को दिया जाता है जिनका प्रतिरूप इन भविष्यद्वक्ताओं के पवित्रस्थान-संबंधी अनुभवों में प्रस्तुत किया गया है। जब हम स्वर्गीय पवित्रस्थान में प्रवेश करते हैं, तभी हमें वह संदेश प्रदान किया जाता है जिसकी घोषणा करने के लिए हमें अभिषिक्त ठहराया गया है। “भट्टी की आग,” जो “हर प्राणी” की परीक्षा करती है, मलाकी तीन की वही भट्टी है।

परन्तु उसके आने के दिन कौन ठहर सकेगा? और जब वह प्रकट होगा, तब कौन स्थिर खड़ा रह सकेगा? क्योंकि वह कुंदन करनेवाले की आग के समान, और धोबी के साबुन के समान है। वह चाँदी को शुद्ध करनेवाले और निर्मल करनेवाले के समान बैठ जाएगा; और वह लेवी की सन्तान को शुद्ध करेगा, और उन्हें सोने और चाँदी के समान निर्मल करेगा, ताकि वे यहोवा के लिये धर्मपूर्वक भेंट चढ़ाएँ। तब यहूदा और यरूशलेम की भेंट यहोवा को भली लगेगी, जैसे प्राचीन दिनों में, और जैसे पूर्वकाल के वर्षों में। मलाकी 3:2-4.

शोधक जान लेता है कि चाँदी उचित अवधि तक भट्टी में रही है, जब वह इतनी शुद्ध हो जाती है कि उसमें शोधक का मुख प्रतिबिंबित होने लगता है। प्राचीन काल में चाँदी को शुद्ध करने की इस रीति का तथ्य उस कारक क्रिया “marah” के साथ संगति रखता है, जिसे दानिय्येल ने दसवें अध्याय में देखा। इन अंतिम दिनों में प्रभु अपने लोगों को पवित्रस्थान में ले जा रहा है, ताकि उन अभ्यर्थियों की परीक्षा ले, उन्हें शुद्ध करे और मलिनता से रहित करे, जो एक लाख चवालीस हजार की पताका का भाग बनने वाले हैं। इस काल में, “वह हमारे साथ कार्य करेगा,” “यदि” हम “अधर्म को दूर कर दें और हृदय तथा जीवन में शुद्ध बन जाएँ।” कुछ लोग, जैसे दानिय्येल 10 में, उस अनुभव से भाग जाते हैं; परन्तु जो, दानिय्येल द्वारा प्रतीकित, यीशु मसीह के प्रकाशन के उस महान दर्पण-दर्शन को देखते हैं, वे, जैसा यशायाह दर्शाता है, वेदी से लिए हुए एक अंगारे द्वारा अपने होंठों को स्पर्शित पाएँगे और शुद्ध तथा तैयार किए जाएँगे, ताकि पहले एक धर्मत्यागी कलीसिया को, और फिर संसार को, एक संदेश दें।

यह संदेश पवित्रस्थान में उपस्थित उन विश्वासयोग्य प्राणों के लिए प्रस्तुत किया गया है। लैव्यव्यवस्था तेईस, जब पिन्तेकुस्ती काल के साथ समन्वित किया जाता है, तो उसका अभिप्राय परमपवित्र स्थान में वाचा के सन्दूक का प्रतिबिंब प्रस्तुत करना है। विश्वास के द्वारा अध्याय के संदेशों की संरचना पवित्र इतिहास के भीतर तीन मार्गचिह्नों की पहचान करती है, जिनमें भट्टी की परीक्षा संपन्न होती है। दिव्य रीति से गहन—तेईसवें अध्याय की भविष्यवाणी-संबंधी संरचना भविष्यवाणी के विद्यार्थी को प्रथम अध्याय के प्रथम पद में यहजेकेल को स्थित करने की अनुमति देती है।

और तीसवें वर्ष के चौथे महीने के पाँचवें दिन ऐसा हुआ कि जब मैं बंधुओं के बीच केबार नदी के किनारे था, तब आकाश खुल गया, और मैंने परमेश्वर के दर्शन देखे। महीने के पाँचवें दिन, जो राजा यहोयाकीन की बंधुआई का पाँचवाँ वर्ष था। यहजेकेल 1:1, 2.

एक याजक के रूप में, एक लाख चवालीस हजार की मुहरबंदी के समय, यहजेकेल सत्रहवें जुबली-चक्र के तीसवें वर्ष में है, 587 ईसा-पूर्व में नबूकदनेस्सर द्वारा यरूशलेम की तीन घेराबंदियों में से तीसरी घेराबंदी से पाँच वर्ष पूर्व। पद में उल्लिखित तीसवाँ वर्ष पुराने नियम के इतिहास के सबसे महान पुनरुत्थान के तीस वर्ष बाद का है, और वह पाँचवें वर्ष के पाँचवें दिन में है; इस प्रकार यहजेकेल की गवाही पर संख्या पाँच स्थापित होती है। प्रारम्भिक दो पदों में हम पाते हैं कि तीस की पहचान एक बार की गई है और संख्या पाँच का उल्लेख तीन बार किया गया है। लैव्यव्यवस्था तेईस की उस संरचना में, जो पिन्तेकुस्ती ऋतु के साथ संरेखित है, तीस द्वारा निरूपित दूसरी परीक्षा तुरहियों के पर्व तक पहुँचती है; पाँच दिन मसीह के स्वर्गारोहण तक, फिर पाँच दिन प्रायश्चित्त के दिन तक, और फिर पाँच दिन उस मार्गचिह्न तक, जो प्रथम (पिन्तेकुस्त) और अंतिम (तम्बुओं का पर्व) वर्षा—दोनों का प्रतिनिधित्व करता है। यह संरचना तीस को प्रस्तुत करती है, जिसके पश्चात पाँच के तीन चरण आते हैं। यहजेकेल मन्दिर में है और लैव्यव्यवस्था तेईस की संरचना सन्दूक है।

इतिहास इस तथ्य की पुष्टि करता है कि इस बिंदु पर यहजेकेल एक प्रतीकात्मक घेराबन्दी से पाँच वर्ष पहले है, जो यरूशलेम के विनाश द्वारा निरूपित शीघ्र आने वाले रविवार के विधान का प्रतिरूपात्मक समापन करती है। ‘पाँच’ संख्या लैव्यव्यवस्था तेईस की रूपरेखा का एक प्रमुख तत्त्व है, जैसे कि ‘तीस’ संख्या भी है।

इन लेखों में यह दिखाया गया है कि जब अध्याय के प्रथम बाईस पदों को अंतिम बाईस पदों के साथ समरेखित किया जाता है, और फिर उन बाईस-बाईस पदों की दोनों पंक्तियों को पिन्तेकुस्ती काल के साथ समरेखित किया जाता है, तब यह स्पष्ट रूप से चित्रित होता है कि तीन-चरणीय परीक्षा-प्रक्रिया, जो मलाकी की भट्टी की आग है। इन तीन चरणों में प्रथम और तृतीय चरणों में एक अल्फा और ओमेगा निहित है, जो चार मार्गचिह्नों की एक श्रृंखला से बना है,

और वह एक चरण का प्रतिनिधित्व करता है।

फसह, उसके बाद अखमीरी रोटी का पर्व, उसके बाद जौ की प्रथमफल भेंट, फिर अखमीरी रोटी के पर्व के अंत तक 'पाँच' दिन। ये चार मार्गचिह्न पहली परीक्षा का गठन करते हैं, और यीशु सदैव अंत को आरम्भ द्वारा चित्रित करते हैं, और तीसरी परीक्षा भी चार मार्गचिह्नों से बनी है। तुरहियों का पर्व, फिर मसीह का आरोहण, उसके बाद प्रायश्चित्त का दिन, और फिर पाँच दिन बाद पिन्तेकुस्त और झोंपड़ियों के पर्व—दोनों का आगमन। पिन्तेकुस्त अगली वर्षा का प्रतीक है और झोंपड़ियों का पर्व पिछली वर्षा का प्रतीक है। लैव्यव्यवस्था तेईस के नमूने में पिन्तेकुस्त और झोंपड़ियों का पर्व दोनों एक पंक्ति में स्थित होते हैं।

तब, हे सिय्योन की सन्तानो, आनन्दित होओ, और अपने परमेश्वर यहोवा में मगन रहो; क्योंकि उसने तुम्हें पूर्व वर्षा उचित परिमाण में दी है, और वह तुम्हारे लिये वर्षा बरसाएगा—पूर्व वर्षा और पछुआ वर्षा—पहले महीने में।
योएल 2:23.

अंतिम परीक्षा और शुद्धिकरण की प्रक्रिया 31 दिसंबर, 2023 को आरम्भ हुई। पहली परीक्षा वह आधारभूत परीक्षा थी, जिसका प्रतीकात्मक निरूपण “तेरे लोगों के लुटेरों” के विवाद द्वारा हुआ, जिसने उस समूह को विभाजित कर दिया जिसे इससे पहले 18 जुलाई, 2020 की निराशा के द्वारा परखा जा चुका था।

“इतिहास और भविष्यद्वाणी में परमेश्वर का वचन सत्य और भ्रांति के बीच लंबे समय से चले आ रहे संघर्ष का चित्रण करता है। वह संघर्ष अब भी जारी है। जो बातें हो चुकी हैं, वे फिर दोहराई जाएंगी। पुराने विवाद पुनर्जीवित किए जाएंगे, और नई-नई सिद्धांतधाराएँ निरंतर उत्पन्न होती रहेंगी। परन्तु परमेश्वर की प्रजा, जिसने अपनी मान्यता और भविष्यद्वाणी की पूर्ति के संदर्भ में पहले, दूसरे, और तीसरे स्वर्गदूतों के सन्देशों की घोषणा में एक भाग निभाया है, जानती है कि वह कहाँ खड़ी है। उसके पास ऐसा अनुभव है जो कुन्दन सोने से भी अधिक बहुमूल्य है। उन्हें चट्टान के समान दृढ़ता से खड़ा रहना है, अपनी निश्चयपूर्ण आशा के आरम्भ को अन्त तक अटल बनाए रखते हुए।” Manuscript Releases, volume 1, 47.

लैव्यव्यवस्था तेईस में पहली परीक्षा तीन की एक भविष्यसूचक संयोजना द्वारा निरूपित की गई है, जिसके पाँच दिन बाद अखमीरी रोटी का अंत होता है। फसह पहला दिन था, अखमीरी रोटी का पर्व दूसरा दिन था, और पहिलौठे फलों का अर्पण तीसरा दिन था। पाँच दिन बाद अखमीरी रोटी का पर्व समाप्त हुआ। तीन परीक्षाओं में से पहली की यह भविष्यसूचक संरचना तीसरी और अंतिम परीक्षा में भी निरूपित होती है। उस तीसरे वेमार्क में, जो तीन वेमार्कों के पश्चात एक वेमार्क से मिलकर बना है, नरसिंगों का पर्व पहला दिन है, और पाँच दिन बाद मसीह का स्वर्गारोहण है, फिर पाँच दिन बाद प्रायश्चित्त का दिन आता है, और उसके पाँच दिन बाद पिन्तेकुस्त तथा झोंपड़ियों का पर्व—दोनों—निकट आने वाले रविवार के विधान को चिह्नित करते हैं, जिसका प्रतिनिधित्व यहजेकेल की पुस्तक में यरूशलेम के विनाश के रूप में किया गया है।

अखमीरी रोटी के पर्व के अंत और तुरहियों के पर्व के बीच तीस दिन हैं, जो न केवल एक याजक के प्रतीक का निरूपण करते हैं, बल्कि उस दैवीय चित्रण के भीतर प्रस्तुत तीन परीक्षाओं में से दूसरी परीक्षा का भी प्रतिनिधित्व करते हैं।

मसीह का बपतिस्मा फसह, अखमीरी रोटी, और पहिलौठे फलों के उन तीन मार्गचिह्नों को चित्रित करता है, क्योंकि वे तीनों मार्गचिह्न मसीह की मृत्यु, गाड़े जाने, और पुनरुत्थान का प्रतिनिधित्व करते हैं। वे तीन चरण, जिनके बाद चौथे चरण तक पाँच दिन आते हैं, अखमीरी रोटी के पर्व के अंत के द्वारा निरूपित होते हैं। बपतिस्मा उन तीन चरणों को एक ही संक्षिप्त क्षण में प्रस्तुत करता है, जब यूहन्ना ने अपने मसीहा को बपतिस्मा दिया। वसंतकालीन पर्व उन तीन चरणों को प्रत्येक के बीच एक-एक दिन से अलग करते हैं, और शरदकालीन पर्व उन तीन चरणों को प्रत्येक के बीच पाँच-पाँच दिन से अलग करते हैं।

जब हम वसंतकालीन पर्वों की पहली परीक्षा को तीन मार्गचिह्नों के ऐसे संयोजन के रूप में लागू करते हैं, जिनके पाँच दिन बाद एक मार्गचिह्न आता है; और फिर शरदकालीन पर्वों को तीन मार्गचिह्नों के रूप में लागू करते हैं, जिनके पाँच दिन बाद एक मार्गचिह्न आता है, तब एक भविष्यवाणी-संबंधी संरचना स्थापित होती है, जो तीन के एक अलफ़ा मार्गचिह्न से बनी है, जिसके बाद पाँच दिन आते हैं, और फिर उसके बाद तीस दिन आते हैं, तथा शरदकालीन पर्वों की तीसरी परीक्षा तीन के एक मार्गचिह्न के रूप में है, जिसके बाद पाँच दिन आते हैं—यह संरचना पहली परीक्षा को कुल पाँच दिनों को आवृत करते हुए दर्शाती है, जिसके बाद तीस दिनों की दूसरी परीक्षा आती है, जो पाँच दिनों के तीसरे मार्गचिह्न तक पहुँचती है। पाँच प्लस तीस, प्लस पाँच चालीस होता है ($5 + 30 + 5 = 40$)।

मसीह के बपतिस्मे के तुरंत बाद चालीस दिन आए, जिनका समापन तीन परीक्षाओं के साथ हुआ। लैव्यव्यवस्था तेईस की संरचना में पिन्तेकुस्त के काल के साथ मिलाकर और भी बहुत कुछ पहचाना जा सकता है, परन्तु एक अन्य स्तर पर यह अध्याय परमपवित्र स्थान में वाचा के सन्दूक का प्रतिनिधित्व करता है।

लैव्यव्यवस्था तेईस में वसंत और शरद ऋतु के पर्व दो सब्तों के बीच रखे गए हैं। वे दो सब्त दो आवरण करने वाले करूबों का प्रतिनिधित्व करते हैं, और लैव्यव्यवस्था तेईस के साथ संरेखित पिन्तेकुस्तीय काल के मार्गचिह्न सन्दूक तथा दो आवरण करने वाले करूबों का प्रतिनिधित्व करते हैं। यहजेकेल को अध्याय एक में पवित्रस्थान में ले जाया जाता है, और जब उसे वहाँ ले जाया जाता है, तब वह घेरेबंदी से पाँच दिन पहले स्थित होता है, जो यरूशलेम के विनाश की ओर ले जाती है और शीघ्र आने वाले संडे लॉ का प्रतिरूप है। संडे लॉ का प्रतिनिधित्व लैव्यव्यवस्था तेईस में पिन्तेकुस्त और झोंपड़ियों के पर्व द्वारा किया गया है। यहजेकेल तीसवें वर्ष में है, और तीस मलाकी तीन की भट्टी की आग को निर्मित करने वाली तीन परीक्षाओं में से दूसरी की अवधि है। दूसरी परीक्षा का प्रतिनिधित्व तीस दिनों द्वारा किया गया है, ठीक वैसे ही जैसे यहजेकेल सत्रहवें जुबली चक्र के तीसवें वर्ष में है, जो योशियाह के महान फसह से आरम्भ हुआ था, जैसा कि इतिहासकार उसे कहते हैं। यहजेकेल उस घेरेबंदी से पाँच वर्ष पहले है जो अठारह महीने तक चली, और वह मन्दिर में है, जो उन तीन अन्तिम परीक्षाओं के मध्य में है जो बचे हुएों को शुद्ध और निर्मल करती हैं। पतरस कैसरिया-फिलिप्पी (पनियम) में था, जो तीन परीक्षाओं के मध्य में भी था, जैसा कि पनियम (कैसरिया-फिलिप्पी), रूपान्तरण के पर्वत, और क्रूस द्वारा निरूपित होता है।

592 ईसा-पूर्व में यहजेकेल को अलौकिक रीति से “गूँगा” कर दिया गया, और वह तभी बोलता था जब परमेश्वर उसका मुँह खोलता था। यह स्थिति 585/6 ईसा-पूर्व में यरूशलेम के पतन तक बनी रही। जब घेराबन्दी आरम्भ हुई, उसी दिन जब उसकी “आँखों की अभिलाषा” मर गई, तब परमेश्वर ने उससे बुलवाया; परन्तु उसे स्वतंत्र रूप से बोलने की अनुमति तब तक नहीं दी गई जब तक यरूशलेम, जो इस्राएल की “आँखों की अभिलाषा” था, गिर न पड़ा। यरूशलेम का पतन शीघ्र आने वाली रविवार-व्यवस्था का प्रतिनिधित्व करता है, और यही वह स्थान है जहाँ यूहन्ना बपतिस्मा देनेवाले का पिता, जो आठवें वर्ग का एक याजक था, और जो मन्दिर में सेवा करते समय गूँगा कर दिया गया था—जहाँ यहजेकेल भी (दर्शन में) था—लगभग नौ महीने तक गूँगा भी रहा। यूहन्ना के जन्म के बाद आठवें दिन, जब उसका खतना किया जा रहा था, तभी उसे बोलने की अनुमति मिली। दो भविष्यद्वक्ताओं को पवित्रस्थान में गूँगा किया गया। तीसरा भविष्यद्वक्ता, जो पवित्रस्थान में मसीह को देखते समय गूँगा किया गया, दानिय्येल था। दसवें अध्याय में दानिय्येल पवित्रस्थान में है, और ठीक वैसे ही जैसे उसे तीन बार में से दूसरी बार छुआ जा रहा है, वह गूँगा कर दिया जाता है। मध्य-बिन्दु पर दानिय्येल गूँगा किया जाता है।

और जब उसने मुझ से ऐसी बातें कहीं, तब मैं ने अपना मुख भूमि की ओर झुका दिया, और मैं गूँगा हो गया। और देखो, मनुष्यों के पुत्रों के सदृश एक जन ने मेरे होंठों को छुआ; तब मैं ने अपना मुँह खोला, और बोला, और उसके सामने जो खड़ा था उससे कहा, हे मेरे प्रभु, इस दर्शन के कारण मुझ पर पीड़ाएं आ पड़ी हैं, और मुझ में कुछ भी बल नहीं रहा। दानिय्येल 10:15, 16.

बोलना

“बोलने” का प्रतीकवाद उस शीघ्र आने वाले रविवार-विधि के समय चिह्नित होता है, जब संयुक्त राज्य अमेरिका अजगर के समान बोलता है, बिलाम की गदही बोलती है, हबक्कूक का दर्शन बोलता है और झूठ नहीं कहता। वे तीन मूक भविष्यद्वक्ता, जो पवित्रस्थान में रहते हुए गूंगे कर दिए गए थे, यरूशलेम के विनाश के समय बोलते हैं। जकर्याह के साथ, वह यह पहिचान कराने के लिए बोलता है कि उसके पुत्र का नया नाम सही है, इस प्रकार उन फिलादेल्फियाइयों का पूर्वरूप ठहरता है जिन्हें एक नया नाम दिया गया है।

जो जय पाता है, उसे मैं अपने परमेश्वर के मन्दिर में एक खम्भा बनाऊँगा, और वह फिर कभी बाहर न जाएगा; और मैं उस पर अपने परमेश्वर का नाम, और अपने परमेश्वर के नगर का नाम, अर्थात् नए यरूशलेम का नाम, जो मेरे परमेश्वर की ओर से स्वर्ग से उतरता है, लिखूँगा; और मैं उस पर अपना नया नाम भी लिखूँगा। प्रकाशितवाक्य 3:12.

जकर्याह को यूहन्ना का नया कुलनाम लिखने के लिए एक पटिया दी गई।

और ऐसा हुआ कि आठवें दिन वे बालक का खतना करने आए; और वे उसके पिता के नाम पर उसका नाम जकर्याह रखने लगे। परन्तु उसकी माता ने उत्तर देकर कहा, नहीं; वरन् उसका नाम यूहन्ना रखा जाएगा। तब उन्होंने उससे कहा, तेरे कुल में ऐसा कोई नहीं है जिसका यह नाम हो। और उन्होंने उसके पिता को संकेत किया कि वह उसका क्या नाम रखना चाहता है। तब उसने एक पटिया मँगवाकर लिखा, उसका नाम यूहन्ना है। और वे सब अचम्भित हुए। और तुरन्त उसका मुँह खुल गया, और उसकी जीभ छूट गई, और वह बोलने लगा, और परमेश्वर की स्तुति करने लगा। लूका 1:59-64.

यूहन्ना का नया नाम फिलादेल्फिया की कलीसिया के अनुरूप है, और जकर्याह का नाम लौदीकिया के अनुरूप है, जैसा कि तीसरे स्वर्गदूत के संदेश के प्रति जकर्याह के अविश्वास द्वारा प्रतिनिर्दिष्ट होता है। सभी भविष्यद्वक्ता अंतिम दिनों का संबोधन करते हैं, और अंतिम दिन तीसरे स्वर्गदूत का इतिहास हैं। इसलिए वह स्वर्गदूत जिसने संदेश लाया, अवश्य ही तीसरा स्वर्गदूत होना चाहिए। जकर्याह ने यह समझने से इनकार कर दिया कि प्रभु लौदीकियन सेवेंथ-डे एडवेंटिस्ट कलीसिया को पार कर जाएगा। इन भविष्यद्वक्ताओं में वाणी की पुनर्स्थापना के विषय में और भी बहुत कुछ कहा जाना है, परन्तु हम योशियाह की भविष्यसूचक रेखा की समझ की ओर आगे बढ़ते रहेंगे।

योशियाह का पहिया

हमने सत्रहवें जुबिली चक्र का विवेचन किया है, जो 622 BC में योशियाह के फसह से आरम्भ हुआ था, परन्तु योशियाह की रेखा 622 BC से बहुत पहले आरम्भ होती है। इस्राएल का वह विद्रोह, जिसने शाऊल को इस्राएल के प्रथम राजा के रूप में सिंहासन पर पहुँचाया, उन चालीस वर्षों को चिह्नित करता है जिनमें राजा शाऊल ने राज्य किया; उसके पश्चात् वे चालीस वर्ष आए जिनमें राजा दाऊद ने राज्य किया; और उसके पश्चात् वे चालीस वर्ष आए जिनमें सुलैमान ने राज्य किया। परमेश्वर का वह तिरस्कार, जिसने भविष्यद्वक्ता शमूएल को इतना आहत किया, 1097 BC में हुआ था, और वह विद्रोह की एक भविष्यद्वक्तात्मक रेखा का आरम्भ करता है, जो क्रूस पर जाकर समाप्त हुई, जब यहूदियों ने घोषित किया कि उनका कोई राजा नहीं, केवल कैसर है।

पर उन्होंने चिल्लाकर कहा, इसे ले जाओ, इसे ले जाओ, इसे क्रूस पर चढ़ाओ। पीलातुस ने उनसे कहा, क्या मैं तुम्हारे राजा को क्रूस पर चढ़ाऊँ? प्रधान याजकों ने उत्तर दिया, कैसर को छोड़ हमारा कोई राजा नहीं है। यूहन्ना 19:15.

1097 में, तीन राजा प्रत्येक चालीस-चालीस वर्ष तक राज्य करेंगे, सुलैमान की 977 ईसा पूर्व में मृत्यु तक; तब राज्य उत्तर और दक्षिण में विभाजित हो जाएगा।

और इसके बाद उन्होंने एक राजा चाहा; तब परमेश्वर ने उन्हें बिन्यामीन के गोत्र के एक पुरुष, कीश के पुत्र शाऊल को, चालीस वर्ष के लिए दिया। प्रेरितों के काम 13:21।

जब दाऊद राज्य करने लगा तब वह तीस वर्ष का था, और उसने चालीस वर्ष तक राज्य किया। उसने हेब्रोन में यहूदा पर सात वर्ष और छह महीने तक राज्य किया; और यरूशलेम में उसने समस्त इस्राएल और यहूदा पर तैंतीस वर्ष तक राज्य किया। 2 शमूएल 2:4, 5.

सुलैमान का राज्य 971 ईसा-पूर्व में आरम्भ हुआ; मन्दिर की नींव सुलैमान के चौथे वर्ष (967 ईसा-पूर्व) में डाली गई। निर्माण सात वर्ष तक चला (1 राजा 6:37-38), और मन्दिर सुलैमान के ग्यारहवें वर्ष के आठवें महीने में पूरा हुआ। औपचारिक समर्पण सातवें महीने (एथानीम महीने) में, अर्थात् झोंपड़ियों के पर्व के दौरान, हुआ (1 राजा 8; 2 इतिहास 5-7)। राजाओं, मन्दिर और राष्ट्र—इनमें से प्रत्येक इतिहास में चार सौ नब्बे वर्षों की एक अवधि द्वारा निरूपित है, जो राजाओं, मन्दिर या राष्ट्र में से किसी एक के संबंध में एक भविष्यसूचक काल को स्पष्ट रूप से चिह्नित करती है।

दानियेल को 607 ईसा-पूर्व में बन्दी बनाकर ले जाया गया था, यद्यपि अधिकांश बाइबिलीय कालक्रमविद् 605 ईसा-पूर्व को मानते हैं। ऐतिहासिक अभिलेख को भविष्यवाणी-संबंधी साक्ष्य के अनुरूप होना चाहिए, और 1097 ईसा-पूर्व में राजा की इच्छा से आरम्भ होने वाली इतिहास-रेखा पर ऐतिहासिक रूप से चिह्नित घटनाओं का प्रतीकवाद अनेक भविष्यसूचक साक्षियों पर यह अपेक्षा रखता है कि 607 ईसा-पूर्व ही सही अनुप्रयोग है, न कि 605 ईसा-पूर्व। 607 ईसा-पूर्व राजाओं की रेखा में चार सौ नब्बे वर्षों की समाप्ति को चिह्नित करता है, परन्तु यह उस रेखा में घटित होने वाले सत्तर वर्षों के तीन मुख्य निरूपणों में से एक का आरम्भ भी करता है। 607 ईसा-पूर्व उन सत्तर वर्षों की समाप्ति को चिह्नित करता है जो 677 ईसा-पूर्व में मनश्शे की बन्दीगृह-यात्रा के साथ आरम्भ हुए थे। चार सौ नब्बे वर्षों के प्रतीक का प्रथम निरूपण (जिसके उस रेखा में तीन साक्षी हैं) वहीं समाप्त होता है जहाँ सत्तर वर्षों के तीन साक्षियों में से एक समाप्त होता है और सत्तर वर्षों का दूसरा साक्षी आरम्भ होता है; गणितीय संरचना 607 ईसा-पूर्व के पक्ष में साक्ष्य देती है, इस धारणा के बावजूद कि दानियेल को 605 ईसा-पूर्व में बन्दी बनाकर ले जाया गया था।

उस कालरेखा के भीतर, जिसमें 1097 BC से 607 BC तक के राजाओं से संबद्ध 490 वर्षों की अवधि सम्मिलित है, सुलैमान के मन्दिर के समर्पण से लेकर निर्वासन के पश्चात् ज़रुब्बाबेल द्वारा 516 BC में मन्दिर के समर्पण तक भी 490 वर्ष हैं। ये 490 वर्ष सुलैमान के ग्यारहवें वर्ष में हुए उसके समर्पण से 420 वर्षों तथा बन्धुआई के दौरान मन्दिर के उजाड़ पड़े रहने के 70 वर्षों को जोड़ने से पूर्ण होते हैं, जो कुल 490 वर्ष होते हैं। अर्तक्षत्र के तीसरे फ़रमान 59 वर्ष बाद 457 BC में आया, और वह उन 490 वर्षों का आरम्भ चिह्नित करता है जो परमेश्वर की प्रजा के लिए “ठहराए गए” (काटे गए, दानियेल 9:24) थे, और जो स्तिफ़नुस को पथराव किए जाने के समय, वर्ष 34 में, समाप्त हुए। निस्संदेह, उस भविष्यद्वक्तात्मक कालरेखा में और भी बहुत से गम्भीर कालक्रमिक साक्ष्य हैं, जो 1097 BC में परमेश्वर और भविष्यद्वक्ता की आत्मा के अस्वीकार की आधारभूत धर्मत्याग से आरम्भ होती है और उस समय पर समाप्त होती है जब स्तिफ़नुस ने मसीह को परमेश्वर के दाहिने हाथ खड़ा हुआ देखा। इसी साक्ष्य के भीतर हमें योशियाह का भविष्यद्वक्तात्मक चक्र मिलता है।

मैं “आधारभूत धर्मत्याग” कहता हूँ, क्योंकि इस रेखा का आरम्भ उस समय की पहचान करता है जब इस्राएल ने परमेश्वर को अपने राजा के रूप में अस्वीकार कर दिया, और एक सांसारिक राजा रखने की अपनी इच्छा के द्वारा इस्राएल के मानवीय राजतंत्र की नींव को इस प्रकार चिह्नित किया। मैं यह योशियाह के चक्र के लिए भी लिखता हूँ, जिसका अर्थ है “परमेश्वर की नींव,” जो परमेश्वर की प्रजा की नींव तथा उसके आधारभूत धर्मत्याग—दोनों का एक प्रतीक है।

जब सुलैमान की मृत्यु हुई और बारह गोत्र उत्तर और दक्षिण में विभाजित हो गए, तब यारोबआम द्वारा स्थापित जाली उपासना-प्रणाली के समर्पण को उस अवज्ञाकारी भविष्यद्वक्ता ने धिक्कारा, और उसके धिक्कार में योशियाह नामक एक आने वाले राजा की भविष्यवाणी निहित थी। यारोबआम और उत्तर के दस गोत्रों के मूलभूत धर्मत्याग के समय योशियाह और उसके उस पुनरुत्थान की भविष्यवाणी की गई थी, जो 622 BC के महान फसह द्वारा चिह्नित है। वह

पुनरुत्थान मूसा के लेखों की खोज और परमेश्वर की प्रजा पर उनके निरंतर धर्मत्याग के कारण न्याय की उद्घोषणा के द्वारा घटित हुआ। जब मूसा के लेखों के वचन राजा योशियाह को पढ़कर सुनाए गए, तब उससे पुराने नियम के इतिहास का सबसे महान पुनरुत्थान उत्पन्न हुआ। भविष्य में योशियाह नामक एक बालक के जन्म लेने की भविष्यवाणी में उस मूलभूत धर्मत्याग की भविष्यद्वक्तापूर्ण निंदा भी सम्मिलित थी, जो अवज्ञाकारी भविष्यद्वक्ता द्वारा राजा यारोबआम के विरुद्ध की गई थी।

जैसा कि दानियेल उसे कहता है, मूसा का शाप लैव्यव्यवस्था छब्बीस का “सात समय” है, और वही विलियम मिलर की मूलभूत खोज बन गया, जो ऐडवेंटिज़्म के मूलभूत सत्यों का प्रतीक है। 11 अगस्त, 1840 को मिलर के संदेश का सामर्थ्य 1838 और 1840 में “योशियाह” लिच के कार्य के द्वारा प्रकट हुआ। 1863 में उन नींवों को एक ओर रख दिया गया और “सात समय” केवल फिलाडेल्फियाई मिलरवादियों के मूलभूत सत्यों का ही नहीं, वरन् नींवों के विरुद्ध लौदीकियाई मिलरवाद के विद्रोह का भी प्रतीक बन गया। प्रथम और द्वितीय स्वर्गदूतों के मिलरवादियों का इतिहास “योशियाह” के उस प्रतीकत्व को धारण किए हुए है, जो एक सौ चवालीस हजार के इतिहास में अक्षरशः पुनः दोहराया जाएगा। योशियाह का पहिया राजा शाऊल के टोने-टोटके तक पीछे जाता है और फिर वहाँ से सीधे रविवार के कानून के समय लौदीकियाई सेवेंथ-डे ऐडवेंटिस्ट कलीसिया के उगल दिए जाने तक पहुँचता है। यहजेकेल में योशियाह का पहिया अब एक सौ चवालीस हजार पर मुहर लगाने की पराकाष्ठा के रूप में खोले जाने की प्रक्रिया में है।

हम इन बातों को अगले लेख में जारी रखेंगे।